माँझ आंगनमे कतिआएल छी

माँझ आंगनमे कतिआएल छी

मुन्नाजी

श्रुति प्रकाशन ,नई दिल्ली

Manjh Aangan me katiaayal chhi: Anthology of Maithili Ghazals by Munnaji first published in 2012, by M/s Shruti Publications, India

Price: Rs. 200

सर्वाधिकार © मुन्नाजी

पहिल संस्करण : 2012

ISBN : 978-93-80538-76-1

Munnaji asserts the moral right to be identified as the author of this work.

Every effort has been made to trace or contact all copyright holders. The publishers will be pleased to make good any omissions or rectify any mistakes brought to their attention at the earliest opportunity.

All rights reserved. This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior written consent in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved above; no part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means-photographic, electronic, mechanical, photocopying, recording, taping, information storage- or otherwise, without the prior written permission of both the copyright owner and the aforementioned publisher of this book or as expressly permitted by law.

श्रुति प्रकाशन : रजिस्टर्ड ऑफिस (०११)-दूरभाष.११०००८-नई दिल्ली ,न्यू राजेन्द्र नगर ,भूतल ,२१/८ : २५८८९६५६) -फैक्स ५८-०११२५८८९६५७(

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor : *Pallavi Distributors*, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो -.9572450405, 9931654742

Manjh Aangan me katiaayal chhi: Anthology of Maithili Ghazal, Rubai by Munnaji

अनुक्रम

आमुख

१

मोन पड़ैए बर्ख १९८९ क जून मासक एकटा राति। हम आ प्रेमचंद्र पंकज हितेन्द्र पुस्तकालय राजे (दरभंगा) द्वारा आयोजित कविगोष्ठीसँ घुरि गाम अबैत रही। बाटमे ओ (प्रे.पं.) गजल लिखबाक चर्चा केने छलाह आ हम हुनका गजल सुनेबाक आग्रह केने रहिअन्हि। ओ गायक नै गजलगो छथि मुदा ओ गाबि कऽ सुनबैत रहलाह, आ हम एकक बाद एक आग्रह करैत गेलिअन्हि। हम ओइ गाओल शेर सभसँ प्रभावित भेलौं आ गजल लिखबाक निश्चय केलौं। गाम पर आबि एकहि रातिमे लगभग सात-आठ टा गजलक प्रारुप तैयार केलौं।

सत्यतः हमरा पद्यमे रुचि नै छल। कविता दिस सोच जाइते नै छल। मुदा तुकान्त जोड़ैत छलौं। आब ऐठाम अहाँ सभ जरूर बुझि गेल हेबै जे कवितामे अतुकान्त कविता दिस हमर सोच नै छल। आ उपरको लिखित कविगोष्ठीमे जखन हमर कविता पढ़बाक बेर आएल तँ हम कविता नै किछु क्षणिका पढ़ने छलौं। क्षणिका आ हाइकू हम शुरुएसँ लिखैत छी। तुकान्त जोड़बाक आदति सन पड़ि गेल छल। जकर कारण छल स्थानीय मंच संचालनक दायित्व। मंच सांस्कृतिक आ राजनैतिक दुनू छल। सांस्कृतिक कार्यक्रममे हमरा अपन गाम (हटाढ़ रुपौली) मे ई काज अढ़ाएल जाइत छल आ हम अपनो ऐमे गंभीर रूपेँ रुचि लै छलौं। हमर मंच संचालनमे सभ प्रकारसँ सहयोगी रहैत छलाह- श्री शैलेन्द्र आनंद, ललनजी झा नंगड़ू, भवनाथ भवन, प्रेमचंद्र पंकज, कुमार राहुल आदि। ऐ मंच संचालन लेल हम तुकान्त करैत छलौं आ तँए गजल दिस रूचि जागल।

गजल दिस रूचि एला पर प्रेमचंद्र पंकज जी सँ एकाध बेर अपनामे चर्च केलौं तँ ओ मतला, काफिया आ रदीफक चर्चा केलाह, मुदा पहिल खेप हेबाक कारणेँ हमर मगजसँ बहरा गेल। ओना हुनका गजल लिखब आ हमरा सभकेँ दू घंटीक बीच सुनेबाक क्रम सन बनि गेल छल। तकर कारण छल जे दुनू गोटे वर्ग संगी रही आ दूनू मैथिली साहित्यमे प्रतिष्ठाक एकहि सत्रक छात्र रही।

शुरुआतहिसँ विहनि कथामे घनघोर रुचि छल। मुदा तुकान्त आ गजलक अछैतो ओइमे कमी नै एलै। आ जँ कोनो समयमे जे गजल फुरा जाइत छल से लीखि डायरीमे चौपेति दैत छलौं, तकरा बाद ओकर कोनो चर्च नै। एकर कारण छल, हमरा गजलक शास्त्रीय पक्ष नै बूझल छल। दिल्लीमे मिथिलांगनक एकटा कार्यक्रममे सुन्दरम जी द्वारा गाओल गजल फेरसँ एक बेर हमरा डायरीमे चौपेतल पुरान गजल सबहक मोन पाड़ि देलक। आ तकरा बाद हम फेरसँ गजल लिखबामे जुटि गेलौं, जे आ आब ई विहिनि कथे जकाँ निर्बाध चलि रहल अछि। आ एक बेर फेर हम फोन पर प्रेमचंद्र पंकज जीकेँ किछु गजल सुनेलौं आ ओइ महँक कमी बतेबाक आग्रह केलौं। पंकज जी कमी बतेबाक बदलामे हमरा कहलाह जे अहाँ गजेन्द्र ठाकुर जीसँ कमी पुछिऔन्ह, हुनका गजलक बारेमे बहुत किछु बूझल छन्हि। ओना ओइसँ किछु दिन पहिने हम विदेह आ अनचिन्हार आखर पर गजेन्द्र ठाकुर जीक आलेख देखने रही आ प्रभावित सेहो भेल रही। मुदा हमरा हिसाबें ओ आलेख ओइ समयमे हमर लेभलसँ बहुत उपर रहै तँए हम पंकज जीसँ सलाह मँगने रही....... मुदा खएर........। तकरा बाद हम अपन पुरान गजल बिना किछु काँट-छाँटकेँ विदेहमे प्रकाशित हेबा लेल पठा देलौं, जकरा बहुत रास संशोधनक संग विदेहमे प्रकाशित कएल गेलै। आ जखन हम अपने अपन गजलक संशोधित रूप पढ़लौं तँ बहुत नियम अनायासे हमरा सोझाँ आबि गेल।

विदेहमे प्रकाशनक पछाति आशीष अनचिन्हारजी जोर दैत गजल लिखबैत रहलाह। ओइपर मंथन, संशोधन करैत रहलाह। जँ हम अपन गजल यात्राक संक्षिप्त रूप कही तँ प्रेमचंद्र पंकज जीक गजल लेखनसँ अप्रत्यक्ष रूपेँ आ गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार जी सँ प्रत्यक्ष रूपेँ सहयोग भेटल। आ अही सहयोगक बलेँ आइ हम अपन पचास गोट गजल आ किछु रुबाइ अहाँ सबहक सोझाँ अनलौं "माँझ आंगनमे कतिआएल छी" केर रूपमे। उपरोक्त सभ गोटेकेँ हार्दिक आभार व्यक्त करैत पाठकक निष्पक्ष विचार चाहैत छी। कोनो कमी पर निर्बाध टिप्पणी केर स्वागत अछि। हँ ऐ संग्रहक किछु गजलमे चारिए टा कए शेर अछि जे कि गलत अछि, कायदासँ गजलमे कमसँ कम पाँचटा शेर हेबाके टा चाही मुदा ऐ प्रकारक त्रुटि लेल मात्र हमही टा जिम्मेदार छी आ भविष्यमे एकर सुधार जरूर हेतै।

मुन्नाजी, ५/५/१२

२

सियाराम झा सरस जीक संपादनमे बर्ख १९९० मे "लालकिला आ लोकवेद" नामक एकटा साझी गजल संग्रह आएल। ऐ संग्रहमे गजलसँ पहिने तीनटा भाष्यकारक आमुख अछि। पहिल आमुख संपादक जीक छन्हि आ ओ तकर शुरुआत एना करै छथि "समालोचना आ साहित्यिक इतिहास लेखनक क्षेत्रमे तकरे कलम भँजबाक चाही जकरा ओइ साहित्यक प्रत्येक सूक्ष्तम स्पंदनक अनुभूति होइ......."। अर्थात सरसजीक हिसाबेँ कोनो साहित्यिक विधाक आलोचना, समीक्षा वा ओकर इतिहास लेखन वएह कऽ सकैए जे ओइ विधामे रचनारत छथि। जँ हम एकर व्याख्या करी तँ ई नतीजा निकलैए जे गजल विधाक आलोचना वा समीक्षा वा ओकर इतिहास वएह लीखि सकै छथि जे गजलकार होथि। मुदा हमरा आश्चर्य लगैए जे ने ई. १९९० सँ पहिले सरस जी ई काज केलाह आ ने १९९० सँ २००८ धरि ई काज कऽ सकलाह। २००८ केँ ऐ दुआरे हम मानक बर्ख लेलौं जे कारण २००८ मे हिनकर, मने सरस जीक, एखन धरिक अंतिम गजल संग्रह "थोड़े आगि-थोड़े पानि" एलन्हि मुदा ओहूमे ओ एहन काज नै कऽ सकलाह। आ बर्ख २००८ मे गजल विधा पर केन्द्रित ब्लाग "अनचिन्हार आखर" आएल जइमे गजलक व्याकरण आ आलोचना पर पर्याप्त काज भेल। आ गजल विधाकेँ सरस जी आ हुनक टीमसँ छुटकारा प्राप्त भेल। आ जे काज १०० साल मे नै भेल से मात्र एक साल पाँच मासमे गजेन्द्र ठाकुर कऽ देखेलाह आ मैथिली गजलकेँ पहिल गजल शास्त्र देलाह। ई हमरा हिसाबेँ कोनो गजलकारक सीमा भऽ सकैत छलै मुदा सरस जीक दोहरा चरित्र ओही आमुखक तेसर आ चारिम पृष्ठमे स्पष्ट भऽ जाइत अछि, जतए सरस जी लिखै छथि "मैथिली साहित्यमे तँ बंगला जकाँ गीति-साहित्यिक एकटा सुदीर्घ परंपरा रहलैक अछि। गजल अही परंपराक नव्यतम विकास थिक, कोनो प्रतिबद्ध आलोचककेँ से बुझऽ पड़तैक। हँ ई एकटा दीगर आ महत्वपूर्ण बात भए सकैछ जे मैथिलीक समकालीन आलोचकक पास एहि नव्यतम विधाक आलोचना हेतु कोनो मापदंडिके नहि छन्हि। नहि छन्हि तँ तकर जोगार करथु.........."

आब ई देखल जाए जे एकै आलेखमे सरस जी कोना दोहरापन देखा रहल छथि। आलेखक शुरुआतमे हुनक भावना छन्हि जे जे आदमी गजल नै लीखै छथि से एकर समीक्षा वा इतिहास लेखन लेल अयोग्य छथि मुदा फेर ओही आलेखमे ओहन आलोचकसँ गजल लेल मापदंड चाहै छथि जे कहियो गजल नहि लिखला। भऽ सकैए जे सरस जी ई आरोप अपन पूर्ववर्ती विवादास्पद गजलकार मायानंद मिश्र पर लगबथि होथि, जे कि सरस जीक हरेक आलेखसँ स्पष्ट होइत अछि। मुदा ऐठाम हमरा सरस जीसँ एकटा प्रश्न जे जँ कोनो कारणवश माया जी ओ काज नै कऽ सकलाह वा जँ मायानंद जी ई कहिए देलखिन्ह जे मैथिलीमे गजल नै लिखल जा सकैए तँ ओकरा गलत करबा लेल ओ अपने (सरस जी) की केलखिन्ह। २००८ धरि मैथिलीमे १०-१२टा गजल संग्रह आबि चुकल छल। मुदा अपने सरस जी कहाँ एकौटा गजल संग्रह समीक्षा वा आलोचना केलखिन्ह। गजलक व्याकरण वा इतिहास लेखन तँ बहुत दूरक बात भऽ गेल, सरस जी कहै छथि जे गोर बीसेक बहरमे ओ गजल लिखै छथि, मुदा हुनकर संग्रहसँ स्पष्ट अछि जे बहरक सामान्यो ज्ञान हुनका नै छन्हि, आ जँ छन्हि तँ से हुनकर गजलमे गोर बीसेक छोड़ू, एक्कोटा बहरमे गजल लिखल नै भेटैछ। ऐ आलेखसँ दोसर बात इहो स्पष्ट अछि जे सरस जी कोनो समकालीन आलोचककेँ गजलक समीक्षा लेल मापदंड देबा लेल तैयार नै छथि। जँ कदाचित् कनेकबो सरस जी आलोचक सभकेँ मापदंड दितथिन्ह तँ संभवतः २००८ धरि गजल क्षेत्रमे एहन अकाल नै रहितै।

आब हम आबी विदेहक अंक ९६ (१५-३१ दिसम्बर २०११) पर जइमे श्री मुन्ना जी द्वारा गजल पर पहिल परिचर्चा करबाओल गेल छल। आन-आन प्रतिभागीक संग-संग प्रेमचंद पंकज नामक एकटा प्रतिभागी सेहो छलाह। पंकज जी अपन आलेखमे आन बातक संग इहो लिखैत छथि "कतिपय व्यक्ति एकटा राग अलापि रहल छथि जे मैथिलीमे गजलक सुदीर्घ परम्परा रहितहु एकरा मान्यता नहि भेटि रहल छैक। एहन बात प्राय: एहि कारणे उठैत अछि जे मैथिली गजलकें कोनो मान्य समीक्षक-समालोचक एखन धरि अछूत मानिकऽ एम्हर ताकब सेहो अपन मर्यादाक प्रतिकूल बुझैत छथि। एहि सम्बन्धमे हमर व्यक्तिगत विचार ई अछि, जे एकरा ओहने समालोचक-समीक्षक अछूत बुझैत छथि जनिकामे गजलक सूक्ष्मताकें बुझबाक अवगतिक सर्वथा अभाव छनि। गजलक संरचना, मिजाज आदिकें

बुझबाक लेल हुनका लोकनिकें स्वयं प्रयास करऽ पड़तनि, कोनो गजलकार बैसि कऽ भट्ठा नहि धरओतनि। हँ, एतबा निश्चय, जे गजल धुड़झाड़ लिखल जा रहल अछि आ पसरि रहल अछि आ अपन सामर्थ्यक बल पर समीक्षक समालोचक लोकनिकें अपना दिस आकर्षित कइए कऽ छोड़त।" अर्थात प्रेमचंद जी सरसे जीक जकाँ भट्ठा नै धरेबाक पक्षमे छथि। सरस जी १९९० मे कहै छथि मुदा पंकज जी २०११ केर अंतमे मतलब २२साल बाद, सरस जी सेहो बहरमे नै लिखि पाबै छथि आ प्रेमचन्द्र पंकज सेहो बहरमे नै लिखि पाबै छथि। मतलब बर्ख बदलैत गेलै मुदा मानसिकता नै बदलै। ओना ऐठाम हम ई जरुर कहए चाहब जे भट्ठा धराबए लेल जे ज्ञान आ इच्छा शक्ति चाही से बजारमे नै बिकाइत छै। मुदा आब ऐठाम हम ई जरूर कहए चाहब जे मायानंद मिश्रक बयान आ अज्ञानतासँ मैथिली गजलकेँ जतेक अहित भेलै तइसँ बेसी अहित सरस जी वा पंकज जी सन अभट्ठाकारी लोकनिसँ भेलै।

आब हमरा लोकनि आबी मुन्ना जी प्रस्तुत हुनक पहिल गजल संग्रह पर। जँ अहाँ मुन्ना जी द्वारा लिखल आमुख पढ़ब तँ नीक जकाँ बुझा जाएत जे आखिर मैथिली गजलमे मुन्नाजी किए कतिआएल रहलाह। आखिर की कारण छलै जे पंकज जी अपन खास मित्रकेँ गजल सुनबैत तँ रहलाह मुदा अपन मित्रकेँ गजल लिखबाक लेल उत्साहित नै केलाह जखन कि हुनका बूझल छलन्हि जे मुन्ना जी गजलमे सेहो रुचि लऽ रहल छथि। भऽ सकैए जे ई आरि-खेत बला भावनाक विषय हुअए मुदा एकर परिणाम खतरनाक भेलै। अर्थात मुन्ना जी बहुत दिन धरि गजलसँ दूर रहि गेलाह। हमरा विश्वास अछि जे जँ पंकज जी ओइ समयमे मुन्ना जीकेँ भट्ठा धरेने रहितथिन्ह तँ आइ मुन्ना जी गजलमे बहुत आगू रहितथि आ मात्र इएह मुन्ना जी नै बल्कि हजारो मुन्ना जी गजलमे आगू अबितथि। मुदा एतेक भेलाक बाबजूदो हमरा खुशी ऐ बातक अछि जे मुन्ना जी कतिआएल तँ रहलाह मुदा पछुआएल नै रहलाह। आ ई बात अहाँ हुनक हरेक गजल पढ़ि कऽ अनुभव कऽ सकैत छी। चाहे ई बात व्याकरणक होइ वा भाव-भंगिमाक वा शब्द संयोजनक, आइ मुन्ना जी अपन समकालीन गजलकार (खास कऽ अपन मित्र वर्गादिसँ) बहुत आगू छथि।

आशीष अनचिन्हार, ५/५/१२

३

“माँझ आंगनमे कतिआएल छी” मुन्नाजीक रुबाइ आ गजल संग्रहक नाम अछि। कतिआएल आ सेहो माँझ आंगनमे! की कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि ई आकि गजलक स्वभाव अछि ई? नहिये ई कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि नहिये ई गजलक स्वभाव अछि, ई एकटा यथार्थ अछि। मुन्नाजी सन कतेको लोक कतिआएल छथि, प्रतिभा अछैत हेराएल छथि। मुदा गजलकार सभटा दोख अपनेपर लऽ लै छथि।

आब तँ माँझ आंगनमे कतिआएल छी
अपने चालिसँ आब बेरा गेलहुँ हम

आ सएह कारण अछि जे ओ नोरक सुख भोगऽ लागै छथि।

नोर तँ खसैए मुदा मजा सन लगैए
केहन नीक प्रेमक दुख लेलहुँ हम

बड़का खाधिमे खसै छथि आ तहू लेल अपनेकेँ दोखी मानै छथि:

छोटको ठेससँ नै सबक लेलहुँ हम
तँए बड़का खाधिमे खसि गेलहुँ हम

तँ की गजलकार प्रेमक महत्व बिसरि गेल छथि, नै प्रेम तँ सभकेँ चाही।

सभ उमेर वर्गकेँ प्रेम चाही
मरितो धरि कुशल-छेम चाही

आ हिनका जँ कोस दू-कोस मात्र चलबाक रहितन्हि तखन ने, हिनका तँ बहुत आगाँ बढ़बाक छन्हि तँ प्रेम चाही।

डाहसँ पहुँचब कोस-दू कोस
आगू बढ़बा लेल तँ प्रेम चाही

आ से सभ ठाम। एकटा हमर संगी छल, एकटा परीक्षामे टॉप केलक तँ बाजल- नै कम्पीट करै छी तँ नै करै छी, आ करै छी तँ टॉप करै छी। ओ गजलकार नै छल जँ रहितए तँ अहिना लिखितए जेना मुन्नाजी लिखै छथि:

बदरी लादल रहै कोनो बात नै
जदि बरसी तँ बरिसात बनि कऽ

आ नजरि-नजरिक फेर आ हाफ ग्लास फुल, ई दुनू टा अवधारणा ऐ रूपमे ओ राखै छथि:

नजरि उठा कऽ देखबै तँ खाली बुझाएत ई दुनियाँ
नजरि गरा कऽ देखबै तँ सभ देखाएत ई दुनियाँ

समालोचना आ विरोध दुनूकेँ गजलकार नीक मानै छथि।

पक्षधरसँ राखू अपनाकेँ बचा कऽ
विपक्षीक सभ बातकेँ नै तीत बुझू

महगाइसँ लोक बेकल अछि मुदा तकरा लेल झुमैत मचानक बिम्ब देखू:

महगाइसँ खूने नै हड्डियो सुखाइए
आब झुलैत मचान सन लगैए लोक

आ ई उलटबासी देखू, बिम्ब नव, भावना शाश्वत:

हम तँ घूर जड़ेलौं गर्मी मासमे
मिझाएल आगिसँ पसाही कहियो

ई कोन गोष्ठी छी जे अछि कोन पत्रिकाक प्रायोजित चिट्ठी छपबाक राजनीति सन, ई रुबाइ देखू:

मोन भए उठल दुखित होहकारीसँ
उठि दर्शक भागल मारामारीसँ
प्रायोजक तँ पथने रहल कान अपन
कर्ता देखार भेला जतियारीसँ

मुदा बाढ़िक विषय जँ मैथिली गजलक अंग नै बनए तँ बुझू जे गजलकार समाजसँ कतिआएल छथि। मुदा से नै अछि।

धार एखन धरि तँ उफानपर अछि
लोक ताका-ताकी करैत बान्हपर अछि

आब पड़ाइन घटल अछि, मिथिलासँ पड़ाइन। बाहरी लोक बिहारीकेँ मजदूर आ श्रमिकक पर्यायवाची मानि लेने छथि। तहूपर गजलकारक कलम चलल अछि।

बिहारक सिरखारी बदलि गेल सन लगैए आब
श्रमिक घटलासँ कंपनी-मालिक लगै बिहारी जकाँ

मुन्नाजीक गजल आ रुबाइ स्वच्छन्द रूपसँ बमकोला जेकाँ बहल अछि। शेरक स्वभाव होइ छै जे जँ ओकरा नीकसँ कहल जाए तँ आह-बाह लोक करिते अछि। मैथिलीमे गजल-रुबाइ जइ तरहेँ प्रसारित भऽ रहल अछि से देखि कऽ यएह लागि रहल अछि जे जतेक ई विधा अपनाकेँ पसारि रहल अछि तइसँ बेशी मैथिली लाभान्वित भऽ पसरि रहल अछि।

--**गजेन्द्र ठाकुर** १९ मइ २०१२

गजल

1

बनलै सरकारी किरानी जिनगी नेहाल भऽ गेलै

प्रूफ पढ़ि संपादक कहेबा लेल बेहाल भऽ गेलै

रंगकर्म केर ज्ञानक बिन पिटए डंका सगरो

मैथिली रंगकर्म क्षेत्रक ओ बुझू दलाल भऽ गेलै

मारि अंघोरिया तकै प्रायोजक खरचा-पानि लेल

मैथिली केर नाम बेचि बुझू जे मालो-माल भऽ गेलै

रंगोत्सवमे लागै सर्वभाषा रंगमंचनक भीड़

देखू जे अपन भाषाक नाटकक अकाल भऽ गेलै

आखर---19

2

धार एखन धरि तँ उफानपर अछि

लोक ताका-ताकी करैत बान्हपर अछि

नहि जानि किओ केखनो जाएत भसिया

किओ कोठा पर किओ मचानपर अछि

कोठो बलाकँ तँ नै बकसथिन्ह कमला

दूनू बगलीक बान्ह कटानपर अछि

भोर होइते मचि गलै गरद-मिसान

कोठा मड़इया दूनू भसानपर अछि

आखर-15

3

फाटैत छल जतए मेघ आ जमीन

पहुँचल पहिने ओतहि अभागल

बुझनुक बुझए सियार अपनाकेँ

जा धरि छल टिकल नीलमे रँगल

फँसि गेल अपनेसँ व्यूहमे बेचारा

नै भेलै लाठी अपने ओकरा भाँजल

जतऽ शेर राज करै छल पहिनेसँ

बुधियार छल ओ पहिनेसँ माँजल

सियार जा कऽ पढ़ौलक मंत्र जखन

प्रजा शेरसँ छल पहिनेसँ साधल

आखर---14

4

बिगड़लो रुपकेँ नकल करैए आब लोक

नकलोकेँ यथार्थ संजोगि राखैए आब लोक

दायित्व बुझैए मात्र अपन स्वार्थपूर्ति लेल

अनकामे अपनाकेँ विलगा लैए आब लोक

धुँआधार हँकैए गप्प लोक कल्पनाकेँ भावेँ

यथार्थमे अपनाकेँ सुनगा लैए आब लोक

जीबनक दशा-दिशा तय करैए मात्र स्वयं

भाइ देखावामे स्वयंकेँ हेरा लैए आब लोक

देखू पहिनेसँ आरक्षित भऽकेँ जिबैए सभ

मुदा बेर पड़ने देखार होऐए आब लोक

स्तरसँ उपर जीबाक भऽ गेलैए परिपाटी

पाइक फेरमे भ्रष्टाचारी भेलैए आब लोक

आखर---17

5

नेताक फाँसमे फँसल ई भारत भाए-भैय्यारी जकाँ
देखू छटपटा रहल माछ भरल अपियारी जकाँ

लोक तँ कटैए घिसिऔर महँगाइसँ मारल भऽ कऽ
भावे मुदित मुदा स्वर निकलैछ फकसियारी जकाँ

आर्थिक उदारीकरण कमाइ आब लाखमे होइछ
मुदा वैश्विक परिस्थितिमे मोल लागए हजारी जकाँ

बिहारक सिरखारी बदलि गेल सन लगैए आब
श्रमिक घटलासँ कंपनी-मालिक लगै बिहारी जकाँ

आइ धिया-पुता घुमैए प्रशिक्षित बेरोजगार भऽ कऽ
महगाइमे आंशिक लाभ पाबि बुझैए दिहाड़ी जकाँ

आखर---20

6

बुझाइ नै अछि बात जे कोन अभिप्राइ छै

कटै अपनोकेँ पाछू ने कोनो सम्प्रदाइ छै

गनै अछि पाइ केर सदिखन आँखि खोलि

काजक बेरमे देखिऔ लागत औंघाइ छै

मातल छै दिनोमे कैंचाक जोगारक लेल

मंगनी बला काजकेँ पुछिऔ तँ खौंझाइ छै

सटू किरानी बाबूसँ घूस केर गप्प लेल

पाइ लैते अनर्गलो काज पूरा भऽ जाइ छै

संत रहै छै सभ उपरसँ देखलापर

पकड़ेला पछातिये तँ किओ चोर कहाइ छै

आखर---16

7

कएल कोनो कुकृत्यसँ लोक नै आब ढ़ठाइए

वएह कुकर्मी सभ-सभ ठाम आब ठठाइए

लोक पबैए रोजगार तँ बुनैए नव समाज

जतऽ जा कमाइए ओतुके भऽ आब सठिआइए

उघरल लोक सभकेँ छुट्टा भऽ घुमैत देखब

मुदा झँपलाहा लोक जे लाजे आब ढ़ठिआइए

नीक काज केनिहार सभ झँपले रहैत अछि

नीच काज केनिहारक झंडा आब उधिआइए

आखर---18

8

आइ सगरो समाज लागै दलाल छै

पाइ लेल अपनोकेँ करै हलाल छै

रखने रहै अछि मुट्ठीमे माटि नुका

कहि कऽ सोना बेचबा लेल बेहाल छै

आधुनिक दौड़मे अछि मातल सन

आर्थिक उदारीकरणकेँ कमाल छै

टल्हाकेँ किनैए सोना बुझि लोक सभ

विदेशी ब्राण्ड-नाम पाबिए बेहाल छै

खुलल पोल छलै दलालक जखने

इंटरपोल धरि मचल बबाल छै

तखन सरेण्डर करै तस्कर सभ

कहै छै जे इ देशभक्तिक सबाल छै

भरि लेलक अछि स्विस बैंकक खाता

जोड़ि हाथ कहै गलतीकेँ मलाल छै

आखर---14

9

ई दौड़ए नेतबा दिल्ली धरि

जेना भैंसी दौड़ै मालक थरि

खाँहिस तँ भरब जेबी छै

दूनू छोड़ै ने कोनो कसरि

बीत नापि कऽ हाथ गनाबए

छै एकल नापिक नै असरि

भरल पंचैती माथ झुकाबै

ई जान बचाबै कोना ससरि

बाँटै धरमकेँ दुनू मीलि कऽ

कूटि-चालि तँ जाइछ घोसरि

आखर---11

10

आजुक युगक कथा पुराण सुनू

जाहिसँ पेट भरए सएह गुनू

नै करू देखाँउसे दूइर समय

स्वंय कोनो समस्याक निदान चुनू

जँ लागल पसाही अनका घरमे

तकरा लेल अहाँ नै कपार धुनू

घर तँ बचाउ सदिखन अप्पन

मुदा तँ दोसरा बेर नै आँखि मुनू

आखर–13

11

माछ मँगैए आरक्षण गणतंत्रक लिहाजसँ

माटि-पानि छोड़ि देलक आब चलैए जहाजसँ

छोड़ि भरोसा जालकेर निकलै छलै ओ गाँजसँ

एलेक्ट्रीक-मशीन आबि करैए बहार माँझसँ

कनिक्के पानि पसीन नै निकलैत छी बैराजसँ

बर्फक बीच जीबि आब खुश भऽ गेलौ सुराजसँ

ओतौ नेता भेल प्रविष्ट जुटै छी एक अवाजसँ

मनुक्खो डरैत अछि ऐ सिंगी-माँगुर जाँबाजसँ

आखर---18

12

जुग बीति गेलै लगबैत जोगारमे

मुदा पता नै की लीखल छै कपारमे

दिन बितेलौं दोस्तीए निमाहि हम तँ

तैयो छल हत्यारा अपने भजारमे

भाइ जे काटैए गरदनि सदिखन

ओ जे माथा टेकैए मंदिर-मजारमे

हे एना नै चलू हाथ छोड़ि बाटपर

बहि जाएब कहियो उन्टा बयारमे

जे बुझतै बितैत समय केर मोल

मुन्ना ओकरे दिन बिततै बहारमे

आखर-----14

13

जे चुबै छै ठोर-आँखिसँ ओकरा ताड़ी बुझू

जँ पीतै केओ संसारमे तँ बरबादी बुझू

आब तँ एहने बिआहक परिपाटी बुझू

लिव-इन-रिलेशन वाली घरवाली बुझू

भाइ जेबीमे घुसल हाथक की महत्व छै

तालसँ ताल मिलए तँ ओकरा ताली बुझू

निराशा संग आशापर टिकल छै दुनियाँ

जँ देखलहुँ भगजोगनी तँ दिवाली बुझू

बहुतों अछि संसाधन देश-परदेशमे

मुन्ना अछि निकम्मा तँ ओकरा मवाली बुझू

आखर-----16

14

ई लोक कहैत हो किच्छो मुदा एहन बात भेल छै

जाहि नगरसँ गेल बिहारी ओ मसोमात भेल छै

आएल सुबुद्धि अपन श्रमकेर बूझल महत्व

आब तँ अपनो राज्यमे विकासक परात भेल छै

देखू जकरा नामपर माँगल गेलै सुख-सुविधा

देशमे ओ बेचारा तँ बहुत दिनसँ कात भेल छै

बोनिहार बिन जे डुबल कतेको कंपनी देशमे

आब बुझू जे सभ अहंकारीकेँ पक्षाघात भेल छै

दोसरक बलें रहैए ओ बहुत कुदैत-फनैत

मुन्ना तँए साहित्यो ओकर बापक जिरात भेल छै

आखर-----19

15

आब कविता आ गीत नै गजल चाही

अपहर्ता चाँगुरसँ सकुशल चाही

ठोरक मुस्की बनल रखबाक लेल

धन आ जन सबहक सबल चाही

जहिया धरि रहत पेट खाली सन

गीत संगीत नै पेटक अमल चाही

कते आश करू हुनकर मड़ैयाक

आब अपन बनाओल महल चाही

तकनीकी रुपें भऽ रहल छी सबल

तँए ई भ्रष्ट व्यवस्था बदलल चाही

आखर-----14

16

छोटको ठेससँ नै सबक लेलहुँ हम

तँए बड़का खाधिमे खसि गेलहुँ हम

जोगाड़ तँ सभ छल जिनगीमे हमरा

जेबी छल छोट तँए नै लगेलहुँ हम

आब तँ माँझ आंगनमे कतिआएल छी

अपने चालिसँ आब बेरा गेलहुँ हम

नोर तँ खसैए मुदा मजा सन लगैए

केहन नीक प्रेमक दुख लेलहुँ हम

बड़ड धाह छल जे ई करब ओ करब

मुदा नौकरीकँ फेरमे सितेलहुँ हम

आखर-----15

17

सभ उमेर वर्गकेँ प्रेम चाही

मरितो धरि कुशल-छेम चाही

लगेबै मोनमे करेजमे आगि

तैं तोहर जौबनक टेम चाही

डाहसँ पहुँचब कोस-दू कोस

आगू बढ़बा लेल तँ प्रेम चाही

लोकसोंझा-सोंझी नै करत बात

पीठक पाछू बड़का ब्लेम चाही

नहि कटतै संयमसँ जीवन

जीबा लेल नित नव गेम चाही

आखर-----12

18

केकरो अंगियाबी तँ गात बनि कऽ

कहियो जँ बही तँ बसात बनि कऽ

घर अछि उदाम तँ कोनो बात नै

अहाँ जँ झाँपी तँ खढ़-पात बनि कऽ

बदरी लादल रहै कोनो बात नै

जदि बरसी तँ बरिसात बनि कऽ

जँ रखबै भूखल तँ कोनो बात नै

जँ भरब पेट तँ खैरात बनि कऽ

आब नै मानै छै केओ ठोरसँ ऐठाँ

तँए तँ सगरो जाउ लात बनि कऽ

आखर-----13

19

नजरि उठा कऽ देखबै तँ खाली बुझाएत ई दुनियाँ

नजरि गरा कऽ देखबै तँ सभ देखाएत ई दुनियाँ

अहाँ केखनो नै करू सवारी दू नाहक एकै बेरमे

जँ करबै तँ बाबूबिच्चे धारमे डुबाएत ई दुनियाँ

संगतुरियाकेँ दबेबाक पाप भरल अछि मोनमे

जानू केखनो अन्हरियामे धकेलि आएत ई दुनियाँ

ऐठाम भ्रष्टाचारी केर नेतमे खोट अछि सदिखन

आब तँ कहियो एकर कुर्सी पलटाएत ई दुनियाँ

आखर-----20

20

हियासँ हिया मिलाउ नजरिसँ काज नै चलत

जोगार बैठकी केर उठा-उठी राज नै चलत

समय दूनू गोटेक लेल अछि अन्हरिया बला

जँ मोनमे इजोत नै जागत तँ काज नै चलत

समेटि कऽ अपन बाँहिमे बिहुँसैत रहू अहाँ

केवल जँ मूँह निहारब तैसँ काज नै चलत

अंगिया कऽ अपन संबंधकेँ पूर्ण विराम दिऔ

सिनेहक बीच कौमा देबै तैसँ काज नै चलत

अहाँ पाबि लिअ पहिने ऐ समाजसँ अधिकार

दूनूक लिव-इन रिलेशनसँ काज नै चलत

आखर-----18

21

मूँह पर मुस्की छलै बिहानसँ
पूर भेलै इहो कमैनी बथानसँ

टुग्गर तँ बुझै नेनेसँ अपनाकेँ
दुब्बर नै रहलै भेला सियानसँ

जिनगीक छँटलै अन्हरिया आब
ई भेटल नव तकनीकी ज्ञानसँ

धरमक लेल करए काटा-काटी
देवतो दुखी अपन अपमानसँ

अन्नक जगह लेलक फास्टफूड
डरैए नै केओ अन्नक जिआनसँ

प्रकृति बदलि रहल छैक सौंसे

लोक काज करैए योग आ ध्यानसँ

आखर-----13

22

लोक भऽ लोककेँ दुश्मन बुझू खाली जमाना अप्पन छै

बेर पर मित्र नै बुझै केकरो शत्रु मुदा छप्पन छै

बेर-बेगरते पएर पुजैए पाछु देखाबैए छूरी

तस्करीक मौका नै छोड़ए तैसँ नै बुझू वीरप्पन छै

नजरि गरा रहैए करैए हमला अवसर ताकि

सोंझा आबि माथ झुकाबै ईएह ओकर बरप्पन छै

उपरका मोनसँ साफ अछि भीतरसँ तँ साँपे बुझू

जँ ओ गाएत भजनो लागत भासमे कलछप्पन छै

आखर-----20

23

आधुनिक तकनीकिये केओ सेर-सवा सेर अछि

पारंपरिक वितपनि भेनाइ सेहो अन्हेर अछि

मुदा ई परंपरे निमाहता करत जिनगीकेँ

जेना नाव सदिखन तकैत धारक कछेर अछि

वैश्वीकरण केर दौड़मे सभटा भेल छिन्न-भिन्न

जतै देखू आँखि उठा ततै लागल कूड़ा ढ़ेर अछि

लोक तैयो तँ लगबैत सन देखाइए अंध-दौड़

मुदा वास्तविक संस्कारे-परंपरा बेर-बेर अछि

आखर-----19

24

लिव-इन-रिलेशन लेल प्रेम उधार चाही

हम रही नै रही मुदा प्रेमी जिम्मेदार चाही

सभ तँ विलगा लैए सेहन्ता पूर भेलापर

ओ थकनी उतारैए तँ केकरो व्यापार चाही

उदारीकरण पहुँचल हमर गाम धरि

केकरो समाने तँ केकरो दोकानदार चाही

पीठपर तँ घोंपैए जे छूरा बहुत आदमी

मारए सीनामे हमरा एहने भजार चाही

आखर-----17

25

सूचनाक तंत्र आब सूचित कऽ रहल अछि

जे लोक संवेदनहीन सन भऽ रहल अछि

बनि पछिलगुआ धरैए माइक मंचपर

सौंसे चमचागिरीक नाच कऽ रहल अछि

आब एकरा कोन प्रभाव कहबै हम बाबू

पएर पकड़िनिहार गट्टा धऽ रहल अछि

पता नै कोन बेत्थे मुन्ना घुमैए सगरो नग्र

एम्हर तँ हेंजक-हेंज मजा लऽ रहल अछि

आखर-----17

26

शब्दसँ हटि शब्द-सारसँ जे काज चलाबैए लोक

अर्थकेँ अनर्थ कऽ तँ आब पसाही लगाबैए लोक

सबहक चित्त तँ स्थिर नै रहि पबै छै सदिखन

जिन्दो लोककेँ मरल कहि फायदा उठाबैए लोक

सभटा आब बिसरि जाइछ लोक स्वार्थ-सिद्धि बास्ते

नाङटोकेँ खुजल मंचपर नचाबऽ चाहैए लोक

बिसरि औकाति बेसियोमे अतृप्तिक भान होइ छै

तखन भिजलो काठकेँ धधका तापऽ चाहैए लोक

शब्दक अर्थक ज्ञान वास्ते पलखति नै होइत छै

मुदा शब्द जोड़ि रचनाकार कहाबऽ चाहैए लोक

आखर-----19

27

जकरासँ लय मिलए ओ गीत बुझू

जकरासँ स्वर मिलए ओ मीत बुझू

सिनेही तँ एहिठाम भऽ सकैए केओ

जकरासँ नजरि मिलए प्रीत बुझू

आधुनिकताकेँ फेरमे बहि नै जाउ

परंपराकेँ सदिखन अतीत बुझू

पक्षधरसँ राखू अपनाकेँ बचा कऽ

विपक्षीक सभ बातकेँ नै तीत बुझू

आखर-----14

28

अछि ई दुनियाँ लगैत जोगारसँ बाँचल

निठ्ठलो तँ एतऽ नै अछि व्यापारसँ बाँचल

ऐठाँ पुरुषो रहैत अछि धंधामे लागल

अछि केओ नै एतऽ ऐ अधिकारसँ बाँचल

पसरि गेलैए सगरो गाममे फास्टफूड

आब सभ अछि तीमन-सचारसँ बाँचल

सभ अपनाकेँ पूरे काबिल बुझैए ऐठाँ

केओ नै अछि ठक आ बुधयारसँ बाँचल

आखर-----16

29

विषवमनसँ विषपाइ बनू नै केखनो

अहाँ करू शुद्ध मोन समय अछि एखनो

सदा समय केर संग डेग बढ़ाउ अहाँ

प्रगति केर मोकाम लगीच अछि एखनो

अनीति संग नैतिकताक पाठ नै पढ़ाउ

नेतकेँ बदलबाक समय अछि एखनो

केखनो ने पैसू यै केकरो मोनकेँ भीतर

खाँहिसमे पैसबाक समय अछि एखनो

ताकू नै मलार केकरो सुखाएल मोनमे

रंग-रभसक मोन बाँचल अछि एखनो

आखर-----16

30

जीता-जिनगी श्मसान सन लगैए लोक

मरियो कऽ फिरीसान सन लगैए लोक

महगाइसँ खूने नै हड्डियो सुखाइए

आब झुलैत मचान सन लगैए लोक

नित दाँव खेलि बितबैए समय सभ

हक छीनि बलबान सन लगैए लोक

देखनिहारो आब नै अछि केओ केकरो

सहारा दऽ भगवान सन लगैए लोक

लगा कऽ लगानी मठोमाठ भेल छी हम

घुरबैमे यजमान सन लगैए लोक

आखर-----15

31

नै जानि केकरो बड़प्पन केना सम्हारू

चारि तहमे झाँपल अछि कोना उघारू

सभ कर्तव्य अछि माटिमे गाड़ल सन

गाड़ल वस्तुकेँ अहीं कहू कोना उघारू

दुर्गति पहिने तखन ई सद्गति आबै

कहू दुर्गति लोकक सोंझा कोना उघारू

तेसर क्रम शील केर अछि फरिछाबै

कहू केकरो अश्लीलताकेँ कोना उघारू

चारिम नजरिक फेरमे डुबा रहल

नजरे कड़गड़ तकरा कोना उघारू

आखर-----15

32

हमरा तँ सुख भेटैए गजलक गाँतीमे

ओहिना जेना जाड़मे गर्मी भेटए गाँतीमे

बगए-बानिसँ बुझू जे नन्हकिरबा लागै

अपन सभटा दाढ़ी ताकी नन्हकी नाँतीमे

दारू-दरबार लगा रही निसाँमे मातल

हम बखानी सत्य सभटा उठल आँतीमे

अप्पनकेँ तँ दूर हटा कऽ सही रंगदारी

रंगदारक लेल धार चढ़ेलौं दराँतीमे

आखर-----16

33

केलक रौदी कहियो दाही कहियो

छोड़लक कहियो उछाही कहियो

दोसरक बेगरते देल लगानी

अपना बेगरते उगाही कहियो

केसक बिन ने हएत समझौता

मोकदमा कहियो गवाही कहियो

हम तँ घूर जड़ेलौ गर्मी मासमे

मिझाएल आगिसँ पसाही कहियो

खद्धधारीक इशारे जुलुम करैए

अफसर तँ छल सिपाही कहियो

आखर-----13

34

उठल कछमछी तँ पेदार भऽ गेलौं

बीतल उमिर आब बेकार भऽ गेलौं

पढ़बाक समय गेल रंगदारीमे

आब लेखनीक जे वफादार भऽ गेलौं

धुँआइत देखा रहल बाट सगरो

जेना लगैए सूखल सेमार भऽ गेलौं

जीवन काटब भेल बहुत मोश्किल

आब लागए जेना मँझधार भऽ गेलौं

आखर-----14

35

धरती पर अकछा लोक जाए चाहैए चान पर

डेराइए कुटुकचालि बन्द हएत दलान पर

लोक नहि चाहैए बेर-बेर अपन परिवर्तन

आब तँए तँ निर्भर रहैए अपने समान पर

प्रदूषणसँ उकताइए बचऽ चाहैए बेमारीसँ

मुदा की ओ ओतए जा कऽ रहि पाएत बिछान पर

दूरक ढ़ोल सोहाओन बुझि उपर जाए चाहैए

अनचाहा ऐय्याशीसँ अबैए पुरने मकान पर

आखर-----19

36

लऽ कऽ बैसल थातीकँ उपहार करैए

ओकर पाइसँ ऐश सभ यार करैए

आब धएल छै संबंधे लेल जतियारी

तँए पसारी बुझु जे उपकार करैए

लोक तकैए आब सुविधा जनक वस्तु

तैयो गरमेबाक काज पुआर करैए

खपल जा रहल समाजिक छोट-पैघ

पाइ बला गरीबक मनुहार करैए

सभ्य जा रहल अछि कतिआएल एतऽ

शांति बँटैकँ सभ काज हुड़ार करैए

आखर-----15

37

करै अछि किलोल माथा चढ़ि

अबै नै अछि केओ आगू बढ़ि

मानवता भऽ रहल विलीन

दै अछि उपराग कोठा चढ़ि

जेना गढ़ैछ गहना सोनरा

पड़ोसिया सुनाबै बातो गढ़ि

गढ़ब तँ केहनो गढ़ाएत

मुदा सोझगर हएत मढ़ि

आखर-----11

38

बिनु पीन्हुँ नशामे मातल अछि ई दुनियाँ

शोणिते भीजल जेना काटल अछि ई दुनियाँ

सभ कहै अछि दोषी एक-दोसर लोककेँ तें

अपने सही कहऽमे लागल अछि ई दुनियाँ

मंद-मंद मुस्की मुदा ठोर अछि काँपि रहल

सिनेहसँ सिक्त मुदा फटल अछि ई दुनियाँ

नजरि बचौने रहैए अपने लोक आब तँ

फाँटसँ फटिआएल साटल अछि ई दुनियाँ

राखू अपन विचारकेँ संजोगि कऽ सदिखन

अहीं सन लोक लेल ठाठल अछि ई दुनियाँ

आखर-----17

39

देखू मुसडंडा अराम करैए

लोककेँ जीयब हराम करैए

भरि दिन करैए ओ काटा-काटी

साँझेसँ मुदा राम-राम करैए

चोर-उच्चकाकेँ छै अड्डा एतए

ओ दसमंजिला धराम करैए

सभ्य रहैछ नुकाएल जतए

असभ्य जिनगी विराम करैए

आखर-----12

40

नजरि झाँपि देहकेँ बजार बना लैए

बिनु बिआहो केकरो भतार बना लैए

मानू नै छै सामर्थ्य बुझबाक यथार्थकेँ

तें कल्पनेमे उड़ि कऽ संसार बना लैए

सत्य कही तँ जिनगी बेकार छै लोकक

गाम नै शहरमे परिवार बना लैए

रहै छै आगि जखन स्वार्थ केर मोनमे

तखन गदहोकेँ ओ भजार बना लैए

गुजारि उमेर धरैए बानि समाजक

ता धरि तँ जिनगीकेँ पहाड़ बना लैए

आखर-----15

41

पहिरु गहना एना जे झमका दिए

नेह जोरू एना जे भाग्य चमका दिए

लिअ ने विराम कहियो जिनगीमे

जोश बैसनाहरकेँ सेहो छका दिए

चलू तँ सदिखन समय केर संग

एना बैसू जे जिनगीकेँ गमका दिए

संगी केहनो भेटए तँ डर नै करू

संग धरू एहन जे रमका दिए

करू अफसोच ओहन आदमी पर

जे सबहक जिनगीकेँ ठमका दिए

.

आखर-----14

42

लोक तँ लजाइ छल पहिने छोट काज पर

मुदा आइ काज नीक कऽ उड़ैए जहाज पर

जाति मेटा लोक आइ रहरहाम भऽ जीबैए

तैं केकरो ध्यान नै जाइ छै अनसहाज पर

बन्न भऽ अपने घरमे जीबैए नवका लोक

ओकर मोन कहाँ आब जाइ छै रेवाज पर

पहिने मनुखमे देखाइत छल मनुक्खता

आब छैक टिकल मोन दोसरा अवाज पर

आखर-----17

43

अपन देशक ऐ रोजगारीकेँ खसबैए सरकार

पूँजी निवेशक नामे विदेशीकेँ बसबैए सरकार

हाट-बाजारक महत्व नै बूझै माँल बुझै मूल्यवान

छोट-छोट व्यपारी के तँ भीतर धसबैए सरकार

लगा पसाही देश भरिमे करबैए जन आंदोलन

पीबै बला पानियोमे कचराकेँ भसबैए सरकार

लोकक पैसा-कौड़ी केर इंतजामसँ लड़ैए चुनाव

अप्पन कुर्सीक लेल जनताकेँ फँसबैए सरकार

आखर-----20

44

पश्चिम केर ड्रेसमे मेल लगैए

फीगरसँ देखिऔ फीमेल लगैए

फैशन आ चालिसँ अछि आधुनिक

तैं ई पत्नीसँ बेसी रखेल लगैए

ई बजार भेल जाइए देहगर

तँए सभ देह केर खेल लगैए

बाहरसँ चिक्कन-चुन्मुन देखू

भीतरसँ भारतीय रेल लगैए

आखर-----13

45

अपन माटि-पानिक मोल पानिमे भसा गेलैए

तँए तँ आब शहरुआ रंग धौंस जमा गेलैए

अफसर आ बबुआनी भऽ गेलैए मुट्ठीक खेल

सभ धिया-पुता तकनीकी ज्ञान लऽ रमा गेलैए

देहकेँ जे खूब धुनियो कऽनै पेलक बोनि ऐठाँ

शिक्षाक प्रतापे ओकरे धिया-पुता कमा गेलैए

गमैया लोक आबो जोगेने अछि पुरखाक थाती

शरहक चपेटमे आबि नवका झमा गेलैए

आब नै लुलुआबैए लोक अपन पड़ोसीयाकेँ

पाइसँ पटि सबहक घर गम-गमा गेलैए

आखर-----18

नेनाक नेनमतिसँ जँ कष्ट होइ छै केकरो-केकरो
मुदा जँ सियान करै नेनमति तँ कष्ट हेतै सगरो

बुद्धि तँ जीबाक सभ लग छै राखि तथिआएल बुझू
मुदा बुद्धि बलें मात्र जीबैत देखै छी केकरो-केकरो

डरैए अन्हरियासँ सभ तकैए बाट बिहान केर
अन्हारसँ विलगि कऽ उजास भेटैए केकरो-केकरो

जँ हियाकँ हेड़ाबए चाही तँ हेड़ा लिअ कतौ-केखनो
हियासँ हिया मीलि पबैए केखनो कऽ केकरो-केकरो

जगलोमे जँ देखि लैत अछि सपना केखनो-केखनो
सूतलमे सपनाक यथार्थ भेटैए केकरो-केकरो

आखर-----20

47

पहिने ताकि कनडेरिए फँसेलौं अहाँ

पछाति ब्रम्हचर्य उपदेश देलौं अहाँ

जिनगीक सभ बाट जे लगै छै मलिन

हमर जिनगीमे पैसि कऽ हँसेलौं अहाँ

हम तँ बिलटल रही एकसर भऽ कऽ

हमरा सन ऐ निकम्मासँ बन्हेलौं अहाँ

जिनगी तँ बन्न किताबक पन्ना रहए

मुदा खोलि एकरा सौंसे तँ देखेलौं अहाँ

आखर-----15

48

बड्ड मजा जँ अबैत छैक मुफ्त मालमे

मुदा दुख होइ अछि जीबैत मलालमे

सहि ने सकब समाज केर उपराग

नीक छल जे जीबैत रहितौं अकालमे

मोन ने भरैत छल अबैत वेतनसँ

आब हम अपनाकेँ गानै छी दलालमे

अपन जिनगी आगू बढ़ेबा लेल दोस

लागल छी हम तँ दोसरक हलालमे

आखर-----15

49

केखन धोखा देत ई समान बजरुआ गारंटी नै

ई केखनो हँसाएत केखनो देत कना गारंटी नै

सरकार बनाबै एहन योजना गरीबक लेल

केखन जेतैक गरीबक अस्तित्व मेटा गारंटी नै

केकरोसँ किछु बाँचल नै छै ऐ दुनियाँमे आब

बड़कोसँ किछु बाँचल नै छै ऐ दुनियाँमे आब

सहलहुँ सभ दुख जे भेटल अनकासँ मुदा

अपनोसँ किछु बाँचल नै छै ऐ दुनियाँमे आब

सभ जेतै बिका खाली दामटा सही हेबाक चाही

सगरोसँ किछु बाँचल नै छै ऐ दुनियाँमे आब

अगड़ा केर नाम पर भेल बहुत राजनीति

पिछड़ोसँ किछु बाँचल नै छै ऐ दुनियाँमे आब

50

पहिलुक शब्द कौआ-मेना बिसरल जाइए

आब बसात पछबा सौंसे सिहकल जाइए

नुक्का-चोरी सभ तँ भागि गेलै हमरो गामसँ

ई विडीयो गेम सौंसे आब पसरल जाइए

पानि चोरा कऽ राखि लेलक पाइ बला देशमे

देखू आब गरीबक कंठ लहकल जाइए

कनेकबे जगह देलिए तँ माथ चढ़ि गेल

जमा धौंस हमरे उपर अड़कल जाइए

उड़ै छैक आँचर जखन-जखन हुनकर

से देखि हमरो मोन आब बहकल जाइए

रुबाइ

1

जड़ब अहाँ जरू दिया बाती जकाँ

गाएब तँ गाउ एना पराती जकाँ

ताकि कनखिये मोन ने रिझाउ

अहाँ करू जुनि उकपाती जकाँ

2

दिअए सिनेह अपन नेना जानि कए

हमहूँ टुग्गर निमहब अपना मानि कए

जँ छोड़बै अनेरुआ सन हमरा

तँ फफकि मरब एकसर कानि कए

3

टूटल छल नेह आब तँ जोड़ भए गेलै

छलै दुश्मन मुदा चितचोर भए गेलै

जखने लिखलकै पाँतीमे मोनक बात

दुनूक नेहक तँ भंडाफोड़ भए गेलै

4

हिला देलक गगनकेँ मारि तीर

बचा लेलक जे अर्धनग्न चीर

द्रौपदीकेँ बढ़ा वस्त्र केलक रक्षा

संसार भरि बेटल छल वएह वीर

5

उमरे वर्षक संग बढ़ि जुआइ छै

नजरि सोंझा-सोंझी भए कऽ लजाइ छै

प्रेमक भाव जे नै पढ़ि पाबै अछि

तखन बुझू जे ओ हृदैसँ कसाइ अछि

6

मोन भए उठल दुखित होहकारीसँ

उठि दर्शक भागल मारामरीसँ

प्रायोजक तँ पथने रहल कान अपन

कर्ता देखार भेला जतियारीसँ

7

जखन सभ केओ देखू नेहाल भेलै

तखन बुझू जे गोटी तँ लाल भेलै

दर्शक जखने झूमि उठल मनसँ

तखने तँ संयोजक मालोमाल भेलै

8

ऐ शत्रुकेँ तँ तोड़ै लेल दम चाही

मात्र चित्रगुप्त नै ऐ लेल यम चाही

अहाँसँ किछु नै बिगड़तै एकर

एकरा शोधै लेल तँ खाली हम चाही

9

जतेक चाही जी लिअ सपनामे

राखू यथार्थ संजोगि अपनामे

उधियाउ नै एकपेड़िया बाटपर

नै तँ जाएत नापल जिनगी नपनामे

10

ताकि कनडेड़िए कतए नुकेलहुँ

कहू फेर किए नजरि फेरि लेलहुँ

बिहुँसैत बैसल छी सोंझा अहाँ

आब कहू अहीँ कोना फेर एलहुँ

11

दै छिऐ आशीर्वाद लगा कऽ फानी

छी जोगारमे ऐखनो जे कते तानी

वाह की जमाना देखाइए हमरा

सत्य छै इएह मानी की नै मानी



मुन्नाजी

मुन्नाजी (उपनाम, एहि नामे मैथिलीमे लेखन), मूलनाम मनोज कुमार कर्ण, जन्म 27 जनवरी 1971 (हटाढ़ रूपौली, मधुबनी), शिक्षा स्नातक प्रतिष्ठा, मैथिली साहित्य। वृत अभिकर्त्ता, भारतीय जीवन बीमा निगम। पहिल विहनि कथा 'काँट' भारती मण्डनमे 1995 पकाशित। पहिल कथा कुकुर आ हम, 'भरि रात भोर'मे 1997मे प्रकाशित। एखन धरि कएक दर्जन विहनि कथा, लघु कथा, क्षणिका, गजल आ लघुकथा सम्बन्धी आलेख प्रकाशित। विशेषः- मुख्यतः मैथिली विहनि कथाकेँ स्वतंत्र विधा रूपेँ स्थापित करवाक दिशामे संघर्षरत।